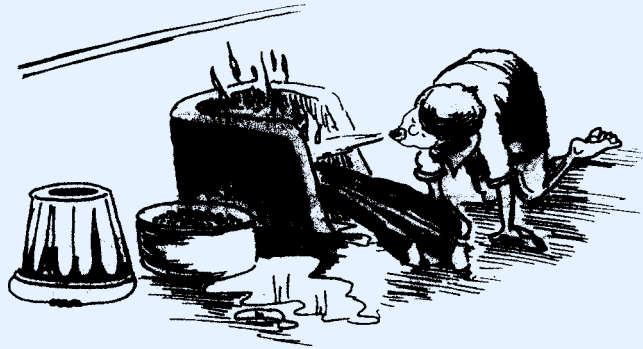




रूस के मशहूर बाल लेखक निकोलाई नोसोव की दिलचस्प कहानी। एक दिन जब मां बाहर चली जाती हैं तो दो मित्र मिश्का और कोल्या खुद खाना बनाने की कोशिश करते हैं। कितना दलिया लें और उसमें कितना पानी डालें इसका उन्हें कोई अंदाज़ नहीं होता है। दलिया पकाते-पकाते उन्हें नानी याद आ जाती है। उनके कारनामों की दास्तां इस कहानी में पढ़ें।

An amazing children's story by Nikolai Nosov - the Russian master story teller. One day mother goes out of town and Mishka and Kolya are left to cook their own food. How much porridge should they take? How much water should they add? They have no inkling of it. Cooking a simple meal of porridge becomes an unforgettable experience.



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए

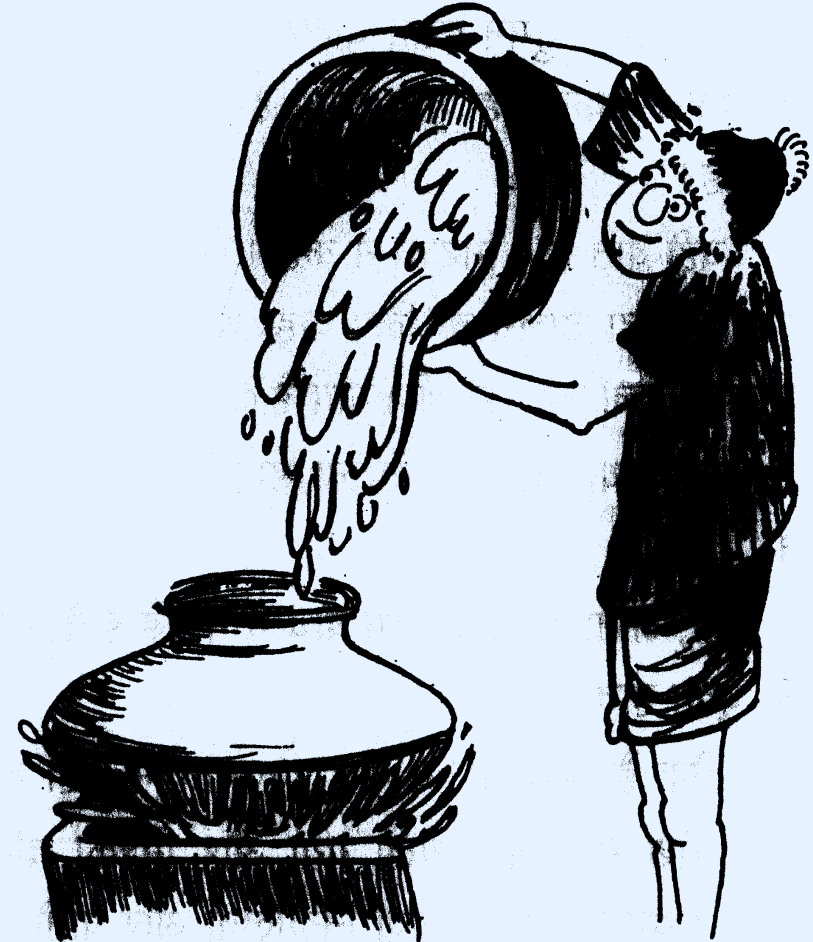
B - 6

Price: 10 Rupees

मिश्का का दलिया

Mishka's Porridge

निकोलाई नोसोव
Nikolai Nosov



मिशका का दलिया: निकोलाई नोसोव
Mishka Ka Dalia : Nikolai Nosov
प्रस्तुति: नरेश बेदी

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : शरद
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

इस किताब का
प्रकाशन भारत ज्ञान
विज्ञान समिति ने
देश भर में चल रहे
साक्षरता अभियानों
में उपयोग के लिए
किया गया है।
जनवाचन आंदोलन
के तहत प्रकाशित
इन किताबों का
उद्देश्य गाँव के
लोगों और बच्चों में
पढ़ने-लिखने
की रुचि पैदा
करना है।

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1998, 1999,
2000, 2002, 2003, 2006

Price: 10 Rupees

मूल्य: 10 रुपए

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-
Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773

मिशका का दलिया

Mishka's Porridge



निकोलाई नोसोव
Nikolai Nosov



पिछली गरमियों में मैं अपनी मां के साथ देहात में रह रहा था। तभी मिशका भी हमारे साथ रहने के लिए आ गया। उसके आने से मुझे बड़ी खुशी हुई, क्योंकि मैं एकदम अकेला था। मां भी बहुत खुश हुई।

Last summer when I was living in the country with my mother, Mishka came to stay with us. I was very pleased to see him because I had been quite lonely without him. Mum was pleased to see him too.

"I'm so glad you've come," she said. "You two boys can keep each other company. I have to go to town early tomorrow, and I don't know when I'll be back. Do you think you can manage here by yourselves for two days?"

"मुझे बड़ी खुशी है कि तुम आ गये," उन्होंने कहा। "तुम दोनों एक-दूसरे का साथ दे सकते हो। मुझे कल सुबह ही शहर जाना है। पता नहीं, मेरा लौटना कब हो। तुम दोनों ढंग से रह तो लोगे, न?"

"क्यों नहीं?" मैंने कहा। "हम क्या कोई बच्चे हैं!"

"अपना नाश्ता तुम्हें खुद तैयार करना होगा। दलिया पकाना जानते हो?"

"मैं जानता हूँ," मिशका ने कहा। "इससे आसान और क्या है!"

"मिशका," मैंने कहा, "ठीक कह रहे हो कि तुम्हें आता है? तुमने दलिया कभी पकाया भी है?"

"परवाह मत करो। मैंने देखा है कि अम्मा कैसे पकाती हैं। इसे मुझ पर ही छोड़ दो। मैं तुम्हें भूखा नहीं मारूंगा। मैं ऐसा दलिया पकाऊंगा कि तुमने ज़िंदगी भर न खाया होगा।"

सुबह मां ने चाय के साथ खाने के लिए रोटी और जैम (मुरब्बे) का जार हमारे सुपुर्द कर दिया और यह बतला दिया कि दलिया कहाँ रखा है।

"Of course we can," I said. "We aren't babies."

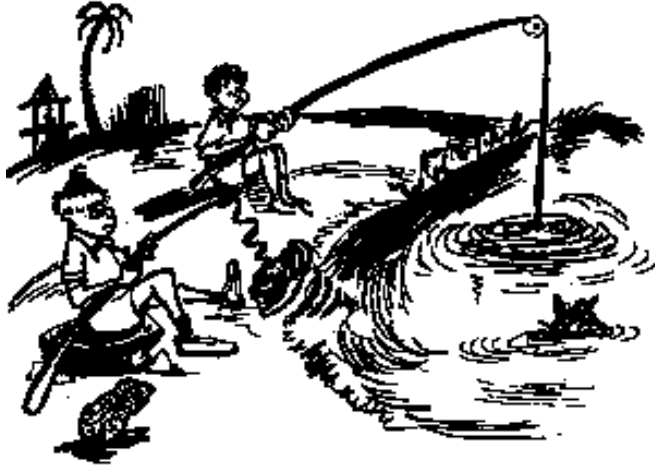
"You'll have to make your own breakfast. Do you know how to cook porridge?"

"I do," said Mishka. "It's easy as anything."

"Mishka," I said, "are you quite sure you know? When did you ever cook porridge?"

"Don't worry. I've seen Mum cook it. You leave it to me. I won't let you starve. I'll make the best porridge you've ever tasted."

In the morning Mum left us a supply of bread and some jam for our tea and showed us where the oatmeal was. She told us how to cook it too, but I didn't bother to listen. Why should I bother if Mishka knows all about it, I thought.



उन्होंने यह भी बताया कि इसे पकाएं कैसे, लेकिन मैंने उनकी बात नहीं सुनी—“मिशका जब जानता है, तो मैं क्यों परेशानी में पड़ूँ,” मैंने सोचा।

इसके बाद मां चली गई और मिशका ने और मैंने तय किया कि जाकर नदी में मछलियां पकड़नी चाहिए। हमने अपनी बंसियां निकालीं और चारे के लिए कुछ केंचुए खोदकर निकाल लिये।

“लेकिन यह तो बताओ,” मैंने कहा, “हम मछली पकड़ने चले गये तो दलिया कौन पकाएगा?”

Then Mum went away and Mishka and I decided to go down to the river to fish. We got out our fishing-tackle and dug up some worms.

"Just a minute," I said. "Who's going to cook porridge if we go down to the river?"

"Who wants to bother with cooking?" said Mishka. "It's too much trouble. We can eat bread and jam instead. There's plenty of bread. We'll cook the porridge later on when we get hungry."

“पकाने के चक्र में पड़ना चाहता कौन है?” मिशका ने कहा। यह फालतू की माथापच्ची है। हम रोटी और जैम खा सकते हैं। रोटी काफ़ी है। भूख लगी, तो हम बाद में दलिया पका लेंगे।”

हमने रोटी काटी और उस पर जैम लगाकर कई सैंडविच बना लिए और उन्हें लेकर नदी की ओर चल दिए। पहले हम ख़ूब तैरे। फिर हम रेत पर लेट गए और अपने सैंडविच खाते रहे। इसके बाद हम मछली पकड़ने बैठ गए। हम घंटों बैठे रहे, पर मछलियों ने चारे को मुंह मारा ही नहीं। बस दस-बारह नन्हीं-नन्हीं मछलियां ही मुश्किल से हमारे हाथ आई होंगी। हमने लगभग सारा ही दिन नदी पर ही बिता दिया। तीसरे पहर हमें जोरों से भूख लगने लगी और पेट में कुछ डालने के लिए हम घर को भागे।

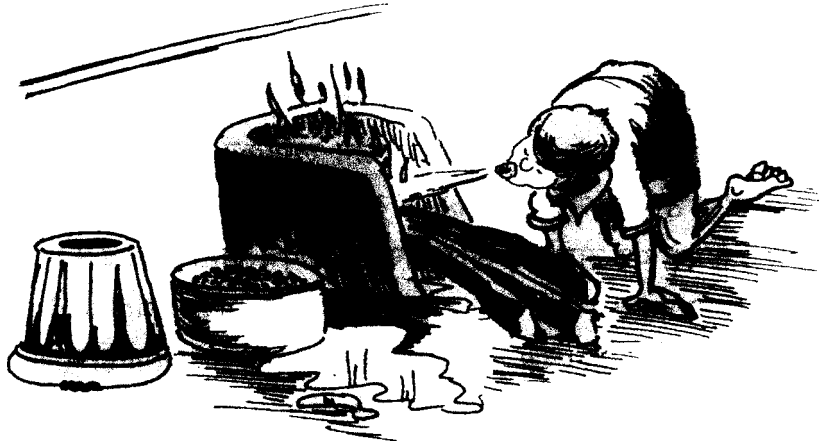
“तो ठीक है, मिशका,” मैंने कहा। “रसोइये तो तुम हो ही—बताओ, क्या पकेगा?”

“चलो,” मिशका ने कहा, “दलिया ही पका लेते हैं। यही सबसे आसान है।”

“ठीक है,” मैंने कहा।

हमने चूल्हा सुलगाया। मिशका दलिया और पतीली ले आया। “देखो, पका ही रहे हो, तो कम न पकाना। भूख के मारे मेरी जान निकली जा रही है।”

We made a lot of jam sandwiches and went off to the river. We went swimming and lay on the sandy beach afterwards drying ourselves and eating our sandwiches. Then we finished. We sat for a long time but the fish wouldn't bite. All we got was a dozen or so gudgeons, teeny-weeny ones. We spent most of the day down at the river. Late in the afternoon we got terribly hungry and hurried home to get something to eat.



उसने पतीली को करीब-करीब मुंह तक दलिये से भर दिया और फिर उसमें ऊपर तक पानी भर दिया।

“पानी ज़्यादा तो नहीं है?” मैंने कहा। “नहीं, अम्मा इसी तरीके से पकाती हैं। तुम चूल्हे को संभालो और पकाई मुझ पर छोड़ दो।”

इसलिए मैं आग को संभालता रहा और मिशका दलिया पकाता रहा, मतलब यह कि बैठकर पतीली को देखता रहा, क्योंकि दलिया अपने-आप पक रहा था।

जल्दी ही अंधेरा हो गया और हमें लैंप जलाना पड़ा। दलिया पकता ही रहा। अचानक मेरी निगाह ऊपर गई और मैंने देखा कि पतीली का ढक्कन उठ रहा है और दलिया बाहर निकल रहा है।

“ऐ मिशका,” मैंने कहा। “दलिये को क्या हो रहा है?”

"Now then, Mishka," I said. "You're the expert. What shall we make? Something that won't take long to cook. I'm awfully hungry?"

"Let's make some porridge," said Mishka. "It's the easiest."

"All right," I said.

We lit the stove. Mishka got the meal and pot.

"See you make plenty while you're at it. I could eat a horse."

He nearly filled the pot up with meal and poured in water up to the brim.

"Isn't that too much water?" I said.

"No, that's the way Mother makes it. You look after the stove and leave the porridge to me."

So I kept the fire going while Mishka cooked porridge, which means that he sat and watched the pot, because the porridge cooked by itself.

Before long it got quite dark, and we had to light the lamp. The porridge went on cooking. Suddenly I looked up and saw the pot lid rising and the porridge spilling out over the side.



“क्यों, उसे क्या हो रहा है?”

“वह तो पतीली से ही बाहर भागा जा रहा है!”

मिशका ने लपककर एक कड़छी ली और दलिये को पतीली में वापस ठेलना शुरू किया। वह इसी में लगा रहा, पर वह फूलता ही चला गया और बाहर निकलता ही रहा।

“पता नहीं इसे क्या हो गया—शायद यह पक गया है?” मैंने एक चम्मच में लेकर जरा सा दलिया चखा, लेकिन वह अभी भी सख्त और सूखा था।

“सारा पानी कहां गया?”

“पता नहीं,” मिशका ने कहा। “मैंने तो काफी डाला था। कहीं पतीली में छेद तो नहीं है?”

हमने पतीली उठाकर उसे अच्छी तरह से देखा पर उसमें छेद का कहीं नाम भी न था।

“पानी उड़ गया होगा,” उसने कहा। “हमें और पानी डालना होगा।”

उसने पतीली से निकालकर कुछ दलिया एक प्लेट में उंडेल दिया। पानी के लिए जगह करने के लिए उसे अच्छा-खासा दलिया निकालना पड़ा। इसके बाद हमने पतीली को फिर चूल्हे पर चढ़ा दिया। वह पकता रहा और जरा ही देर बाद फिर पतीली से निकलने लगा।

"Hey, Mishka," I said. "What's the matter with the porridge?"

"Why, what's wrong with it?"

"It's climbing right out of the pot!"

Mishka grabbed a spoon and began pushing the porridge back into the pot. He pushed and pushed, but it kept swelling

“भई वाह!” मिशका ने हैरानी से कहा, “यह पतीली में क्यों नहीं टिकता?”

उसने अपनी कड़छी उठाई और जल्दी-जल्दी कुछ दलिया और निकालकर उसमें प्याला भर पानी और डाल दिया।

“देखो,”

उसने कहा, “और तुम यह कह रहे थे कि पानी ज़्यादा तो नहीं है!”



दलिया पकता ही रहा और मानें या न मानें, ज़रा ही देर बाद उसने फिर ढक्कन उठा दिया और पतीली से निकलने लगा!

up and spilling over the side.

"I don't know what has happened to it. Perhaps it's ready?"

I took a spoon and tasted a little, but the meal was still hard and dry.

"Where's all the water gone?"

"I don't know," said Mishka. "I'd put an awful lot in. Perhaps there is a hole in the pot?"

We looked all over the pot but there wasn't any sign of a hole.

मैंने कहा, “तुमने इसमें दलिया ज़्यादा डाल दिया होगा। यही बात है। पकते-पकते वह फूल जाता है। पतीली में उसके लिए गुंजाइश नहीं है।”

“यही बात है,” मिशका ने कहा। “सब तुम्हारी ही गलती है। तुम्हीं ने तो ज़्यादा डालने के लिए कहा था, क्योंकि भूख के मारे तुम्हारी जान निकली जा रही थी। याद है?”

“मुझे क्या पता कि कितना डालें? पकाना तो तुम्हें ही आता है, न!”

“हां, आता है। अगर तुम बीच में न पड़े होते, तो मैं कभी का पका भी चुका होता।”

“ठीक है, पकाओ। मैं अब एक बात भी नहीं कहूंगा।”

मैं तैश में आकर चला गया और मिशका दलिया पकाता रहा, मतलब यह कि वह दलिया निकालता और पानी मिलाता रहा। ज़रा ही देर में मेज़ पर अधपके दलिये से भरी प्लेटें ही नज़र आने लगीं। और हर ही बार वह उसमें और पानी डालता रहा।

आखिर मेरा सब्र ख़त्म हो गया।

“तुम ठीक से नहीं पका रहे। इस रफ़्तार से तो दलिया सुबह तक भी तैयार न होगा।”

“ठीक है, बड़े-बड़े होटलों में भी तो इसी तरह पकाया जाता है। क्यों तुम्हें यह बात मालूम नहीं थी, न? वहां खाना रात को ही पका

"Must have evaporated," he said. "We'll have to add some more."

He took some of the porridge out of the pot and put it on a plate; he had to take out quite a bit to make room for the water. Then we put the pot back on the stove and let it cook some more. It cooked and cooked and after a while it began

लिया जाता है, जिससे सुबह वह तैयार मिले।”

“होटलों के लिए यह ठीक होगा। उन्हें जल्दी करने की

ज़रूरत नहीं, क्योंकि उनके पास ढेरों खाना होता है।”

“हमें भी जल्दी करने की क्या है!”

“न, क्या है! और मैं भूखों मरा जा रहा हूँ। फिर, सोने का वक्त भी हो गया है। देखते हो, रात कितनी बीत गई है?”

पतीली में एक गिलास पानी और उंडेलते हुए उसने कहा, “सोने को तुम्हें काफी मिल जाएगा।”

spilling over the side again.

"Hey, what's this!" cried Mishka. "Why won't it stay in the pot?"

He snatched up his spoon and scooped out some more porridge and added another cup of water.

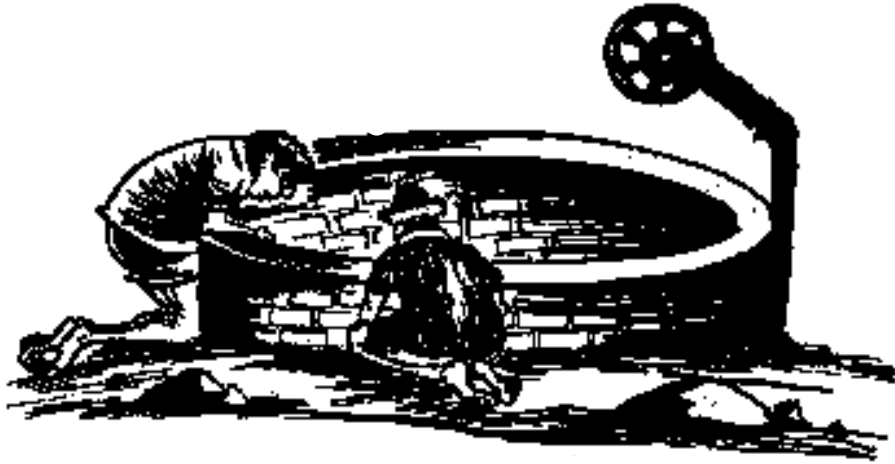
"Look at that," he said. You thought there was too much water."

The porridge went on cooking.

And would you believe it, in a little while it lifted the lid and came crawling out again!

I said: "You must have put too much meal in. That's what it is. It swells when it cooks and there's not enough room in the pot for it."





अचानक मेरी समझ में आ गया कि ग़लती क्या है।

“अगर ठंडा पानी ही मिलाते रहे, तो बेशक यह नहीं पक सकता।”

“लो! तुम्हारे खयाल से दलिया बिना पानी के पकाया जा सकता है?”

“ नहीं। लेकिन मेरा खयाल है कि पतीली में दलिया अभी भी ज़्यादा है।”

मैंने पतीली उतारी, उसमें से आधा दलिया निकाला और मिशका से उसे पानी से भर देने को कहा।

"Yes, that must be it," said Mishka. "It's all your fault. You told me to put a lot in because you were hungry, remember?"

"How do I know how much to put in? You are the one who's supposed to know how to cook."

"So I do. I'd have it cooked by now if you hadn't interfered."

"All right, cook away, I shan't say another word."

I went off in a huff and Mishka went on cooking the porridge, that is, he kept scooping out the extra porridge and

उसने मग्गा लिया और बाल्टी के पास गया।

“मार दिया!” उसने कहा, “पानी तो खत्म हो गया!”

“अब क्या होगा? बाहर एकदम अंधेरा है। हम कुएं तक भी नहीं पहुंच सकते।”

“बकवास! मैं चुटकी बजाते कुछ ले आता हूँ।”

मिशका ने माचिस ली। बाल्टी के कुंडे में रस्सी बांधी और कुएं पर चला गया। कुछ मिनटों में वह लौट आया।

“पानी कहां है?” मैंने पूछा।

“पानी?—वहां कुएं में।”

“बको मत। बाल्टी का तुमने क्या किया?”

adding water. Soon the whole table was covered with plates of half-cooked porridge. And he added water each time.

Finally I lost patience.

"You're not doing it right. This way the porridge won't be ready till morning."

"Well that's how they do it in big restaurants. Didn't you know that? They always cook dinner the night before so it should be ready by morning."

"That's all right for restaurants. They don't need to hurry because they have heaps of other food."

"We don't need to hurry either."

"Don't we?! I'm starving. And besides it's time to go to bed. See how late it is."

"You'll have plenty of time to sleep," he said, throwing another glass of water into the pot. Suddenly it dawned on me what was wrong.

"Of course it won't cook if you keep adding cold water," I said.

"You think you can cook porridge without water?"

"No, I think you've still got too much meal in that pot."

“बाल्टी? वह भी कुएं में है।”

“कुएं में?”

“हां, यही बात है!”

“मतलब, तुमने उसे गिरा दिया?”

“ठीक।”

“गधे कहीं के! इस तरह तो हम भूखे मर जाएंगे। अब हम पानी कैसे लाएंगे?”

“हम केतली में ला सकते हैं।”

मैने केतली उठाई। “लाओ, रस्सी दो।”

“मेरे पास नहीं है।”

“कहां है?”

“वहीं, उसके भीतर।”

“किसके भीतर।”

I took the pot, spilled out half the meal and told him to fill it with water.

He took the mug and went to the pail.

"Dash it," he said. "The water's all gone."

"What shall we do now? It's pitch dark, we'll never be able to find the well."

"Rats, I'll bring some in a jiffy."

He took matches, tied a rope round the handle of the pail and went off to the well. In a few minutes he was back.

"Where's is the water?" I asked him.

"Water? Out there in the well."

"Don't be silly. What've you done with the pail?"

"The pail? That's in the well too."

"In the well?"

"That's right."

“कुएं के।”

“तो तुमने बाल्टी के साथ रस्सी भी गिरा दी न?”

“ठीक बात है।”

हमने और रस्सी ढूंढना शुरू की, पर मिली नहीं।

“मैं जाकर पड़ोसियों से मांग लाता हूं,” मिशका ने कहा।

“न, नहीं ला सकते,” मैंने कहा। “जरा घड़ी देखो। सब कोई कब के सो चुके हैं।”

मौके की बात, मुझे बुरी तरह से प्यास लगने लगी। प्यास के मारे मेरी जान जाने लगी।

मिशका ने कहा, “यही बात है। पानी नहीं होता, तो बुरी तरह प्यास लगती है। रेगिस्तान में भी लोगों को हमेशा इसीलिए प्यास लगती है कि वहां पानी बिलकुल नहीं होता।”

"You mean you dropped it?"

"That's right."

"Oh, you silly ass! We'll starve to death this way. How are we going to get water now?"

"We can use the kettle."

I took the kettle. "Give me the rope."

"I haven't got it."

"Where is it?"

"Down there."

"In the well."

"So you dropped the pail along with the rope?"

"That's right."

We started hunting for another piece of rope, but we couldn't find any.

"Never mind. I'll go and ask the neighbours," said Mishka.

"You can't," I said. "Look at the time. Everyone's gone to bed long ago."

“रेगिस्तानों की बात छोड़ो,” मैंने कहा। “अब ज़रा कहीं से रस्सी ढूँढकर लाओ।”

“रस्सी कहां से लाऊंगे? सभी जगहें तो मैंने छान मारी हैं। सुनो, मछली पकड़ने की बंसी की डोर का इस्तेमाल क्यों न कर लें?”

“वह इतनी मज़बूत है?”

“मेरे खयाल से तो है।”

“अगर न हुई, तो?”

“न हुई, तो टूट जाएगी।”

हमने डोर को खोला, उसे केतली में बांधा और कुएं पर गए। मैंने केतली को कुएं में डाला और उसे पानी से भर लिया। डोर ऐसे तनी हुई थी, जैसे वायलिन का तार।

“टूट जाएगी,” मैंने कहा, “देख लेना।”

“अगर हम इसे बहुत—बहुत होशियारी से खींचें, तो शायद न टूटे।”

मैंने उसे भरसक होशियारी के साथ खींचना शुरू किया। अभी वह पानी से उठी ही थी कि छपाक् की आवाज़ आई और केतली जाती रही।

Mishka said: "It's always like that. When there's no water you always feel thirsty. That's why people always get thirsty in the desert - because there's no water there!"

"Never mind about deserts," I said. "You go and find some rope."

"Where shall I find it? I've looked everywhere. Let's use the fishing-line."

"Is it strong enough?"

"I think so."

"What if it isn't?"

“टूट गई क्या?” मिशका ने पूछा।

“और नहीं तो क्या! अब हम पानी कैसे भरेंगे?”

“चलो, पानी उबालने के बड़े बरतन में भरने की कोशिश करें,” मिशका ने कहा।

“नहीं। इससे अच्छा तो यही रहेगा कि उसे सीधा कुएं में फेंक दें। इसमें परेशानी भी कम होगी। फिर, अब रस्सी भी तो नहीं है।”

“ठीक है, तो पतीली ले लो।”

“हमारे पास फेंकने को पतीलियां नहीं हैं,” मैंने कहा।

“ठीक है, तो गिलास में ही भरने की कोशिश करो।”

“क्या तुम सारी रात गिलास-गिलास भर पानी खींचने में ही लगा देना चाहते हो?”

"If it isn't, it'll break."

We unwound the fishing-line, tied it to the kettle and went out to the well. I lowered the kettle into the well and filled it with water. The line was as taut as a violin string.

"It's going to snap," I said. "You'll see."

"Perhaps it'll hold if we lift it very carefully," said Mishka.

I raised it as carefully as I could. I had just got it above the water when there was a splash, and the kettle was gone.

"Did it break?" asked Mishka.

"Of course, it did. How are we going to get water now?"

"Let's try the samovar," said Mishka.

"No. We might as well throw the samovar straight into the well. Less trouble. Besides, we haven't any more rope."

“लेकिन हम और कर भी क्या सकते हैं? हमें दलिए की पकाई भी तो पूरी करनी ही है। फिर मुझे बुरी तरह प्यास भी तो लग रही है।”

“चलो, मग्गे में भरने की कोशिश करते हैं,” मैंने कहा। “किसी भी हालत में वह गिलास से तो बड़ा है ही।”

हम घर गए और डोर को मग्गे में इस तरह बांधा कि वह उलटे नहीं। फिर हम कुएं पर लौट आये। हम लोग भर पेट पानी पी चुके, तो मिशका ने कहा, “यही होता है—जब प्यास लगती है, तो लगता है कि जैसे सारे समुद्र को ही पी डालेंगे, लेकिन जब पानी पीना शुरू करो, तो मग्गा भर ही काफी हो जाता है। वजह यही है कि आदमी स्वभाव से ही लालची होता है।”

“बकना बंद करो और पतीली यहां ले आओ। हम उसे कुएं से पानी खींचकर यहीं भर सकते हैं। इससे दसियों बार आने-जाने का पचड़ा बच जाएगा।” मिशका पतीली ले आया और उसने उसे कुएं की ऐन जगत पर रख दिया। मेरी कुहनी से वह गिरते-गिरते बची।

"All right then, use the pot."

"We haven't so many pots to throw away," I said.

"Well then, try a tumbler."

"Do you want to spend the rest of the night scooping up water by the tumblerful?"

"But what are we going to do? We've got to finish cooking the porridge. Besides, I'm very thirsty."

"Let's try the tin mug," I said. "It's a little bigger than a tumbler anyway."

“गधे कहीं के,” मैंने कहा। “इसे मेरी कुहनी के ऐन नीचे रखने की क्या तुक है? इसे हाथ में लेकर कुएं से जितनी दूर हो सके, खड़े हो जाओ, वरना तुम इसे भी कुएं में फेंक दोगे।”

मिशका ने पतीली उठा ली और कुएं से दूर हट गया। मैंने उसे भर दिया और हम घर लौट आए। अब तक दलिया एकदम ठंडा हो चुका था और आग बुझ चुकी थी। हमने उसे फिर सुलगाया और पतीली को चूल्हे पर रख दिया। काफी देर के बाद उसने उबलना शुरू किया। फिर वह धीरे-धीरे गाढ़ा हो गया और फच-फच करने लगा।

“सुनते हो?” मिशका ने कहा। “बस, ज़रा ही देर और है—फिर हमें ऐसा दलिया मिलेगा कि कहना नहीं!”

मैंने चम्मच पर जरा सा दलिया लेकर चखा। वह ऐसा बदजायका था कि बस! उसमें जलांध आ रही थी और उसका स्वाद कडुआ था। हम नमक डालना भी भूल गए थे। मिशका ने भी चखा और तुरंत थूक दिया।

We went back to the house, tied the fishing-line to the mug so that it wouldn't overturn and went back to the well. After we had drunk our fill of water Mishka said:

"It's always like that - when you're thirsty you think you could drink up the sea, but when you begin drinking you find one mugful is plenty. That's because people are naturally greedy."

"Stop jabbering and bring the pot out here. We can fill it with water straight from the well. It will save us running back and forth a dozen times."

“नहीं,” उसने कहा। “इसे खाने से तो भूखे मर जाना अच्छा है।”

“इसे खाया, तो तुम सचमुच मर जाओगे।” मैंने कहा।

“लेकिन हम करें क्या?”

“मुझे क्या मालूम!”

“गधे हैं हम!” मिशका ने कहा। “मछलियों की तो हमें याद रही ही नहीं।”

“इतनी रात में हम मछली पकाने के पचड़े में नहीं पड़ेंगे। ज़रा ही देर में सुबह होनेवाली है।”

“हम उन्हें उबालेंगे थोड़े ही। हम तो तल लेंगे। मिनट भर में तैयार हो जाएंगी—देख लेना।”

“चलो, ठीक है,” मैंने कहा।

लेकिन इसमें भी अगर दलिये जितनी ही देर लगी, तो भई मैं तो बाज़ आया।”

“पांच मिनट में तैयार हो जाएंगी—तुम देख लेना।”

Mishka brought the pot and stood it right at the edge of the well. I very nearly knocked it off with my elbow.

"Silly ass," I said. "What's the idea of putting it right under my elbow? Hold on to it and keep as far from the well as you can, or you'll send it flying into the water."

Mishka took the pot and moved away from the well. I filled it up and we went back to the house. By this time our porridge was quite cold and the fire had gone out. We got it going again and put the pot back on the stove to cook. After a long time it started to boil, thickened gradually and made plopping noises.

"Hear that?" Mishka said. "We're going to have some wonderful porridge soon."

I took a little on a spoon and tasted it. It was awful! It had a nasty bitter taste, and we had forgotten to salt it.

मिशका ने मछलियों को साफ करके कढ़ाई में डाला। ज़रा ही देर में कढ़ाई गरम हो गई और मछलियां उसी में चिपक गईं। उसने उन्हें खींचकर निकालने की कोशिश की और उनका भुरता ही बना दिया।

मैंने कहा, “तेल के बिना भी कभी किसी ने मछलियां तली है?”

मिशका ने तेल की बोतल उठाई और कढ़ाई में तेल उंडेल कर उसे सीधा आग पर रख दिया, जिससे मछलियां जल्दी पक जाएं। तेल गरम होकर तड़कने लगा और अचानक उसमें आग लग गई। मिशका ने लपकर कढ़ाई उठा ली। मैं उसपर पानी डालना चाहता था, लेकिन घर में बूंद भर भी पानी नहीं था, इसलिए जब तक सारा तेल खत्म नहीं हो गया, वह जलता ही रहा। कमरा धुएं से भर गया और मछलियों की जगह बस कुछ जले हुए कोयले ही बच रहे।

“तो,” मिशका ने कहा, “अब क्या तलें?”

Mishka tasted it too and spat it out at once.

"No," he said. "I'd rather die of hunger than eat such stuff."

"You'll certainly die if you did eat it," I said.

"But what shall we do?"

"I don't know?"

"Donkeys!" cried Mishka. "We've forgotten the fish."

"We're not going to start bothering with fish at this time of night. It will be morning soon."

"We won't boil them, we'll fry them. They'll be ready in a minute, you'll see."

"Oh, all right," I said. "But if it's going to take as long as the porridge, count me out."

"It'll be ready in five minutes, you'll see it."

Mishka cleaned the fish and put them on the frying pan. The pan got hot and the fish stuck to the bottom. He tried to pull them off and made quite a mess of them.



“जी नहीं, अब कुछ नहीं तला जायेगा। अच्छे-खासे खाने को खराब करने के अलावा इससे तुम घर को भी फूंक दोगे। आज दिन के लिए तुम काफी पकाई कर चुके।”

“लेकिन हम खाएंगे क्या?”

हमने कच्चा दलिया खाने की कोशिश की, पर उसमें कोई मज़ा नहीं आया। हमने कच्चा प्याज़ खाने की कोशिश की, लेकिन वह कडुवा था। हमने तेल खाकर देखा और करीब-करीब उल्टी ही करने को हो गए। आखिर हमें जैम का बरतन मिल गया और हमने

I said: "Whoever tried frying fish without oil?"

Mishka got a bottle of vegetable oil and poured some on to the pan and put it into the stove straight on the coals so it should cook faster. The oil spluttered and crackled and suddenly it caught fire. Mishka snatched the frying pan and I wanted to pour water on it, but there wasn't a drop of water in the house, so it burned and burned until all the oil had burned out. The room was full of smoke and all that was left of the fish were a few burned coals.

उसे सफाचट कर दिया और फिर जाकर सो गए। अब तक काफी रात बीत गई थी।

सुबह हम भूख से मरते उठे। मिशका कुछ दलिया पकाना चाहता था, लेकिन मैंने जब उसे दलिया निकालते देखा, तो मुझे कंपकंपी आ गई।

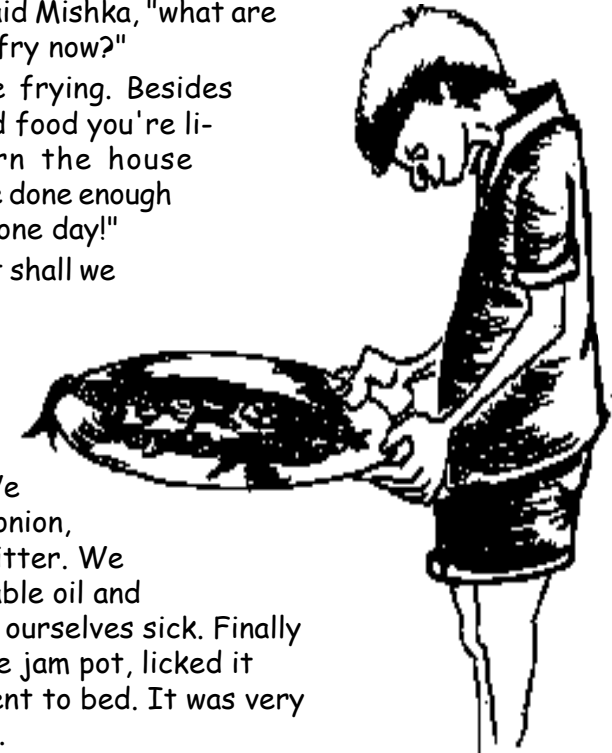
“खबरदार जो हाथ लगाया,” मैंने कहा। “मैं अपनी मकान मालकिन नताशा मौसी से जाकर कह देता हूँ कि कुछ दलिया पका दें।”

"Well," said Mishka, "what are we going to fry now?"

"No more frying. Besides spoiling good food you're liable to burn the house down. You've done enough cooking for one day!"

"But what shall we eat?"

We tried chewing raw meal, but it wasn't much fun. We tried a raw onion, but it was bitter. We tried vegetable oil and nearly made ourselves sick. Finally we found the jam pot, licked it clean and went to bed. It was very late by then.





हमने नताशा मौसी के पास जाकर उन्हें सारा किस्सा सुनाया और उनसे वायदा किया कि वह हमें दलिया पकाकर दे देंगी, तो हम उनके बगीचे की निराई कर देंगे। उन्हें हम पर तरस आ गया। उन्होंने हमें दूध और गोभी के समोसे दिये और दलिया पकने रख दिया। हमने जो खाना शुरू किया, तो ऐसे कि रुके ही नहीं। नताशा मौसी के लड़के वोव्का की आंखें, हमें खाते देख फटी जा रही थीं।

आखिर हमारा पेट भरा। नताशा मौसी ने हमें कांटा दिया और रस्सी भी। हम कुएं से बाल्टी और केतली निकालने गये। हमें उन्हें निकालते-निकालते काफी देर लग गई, लेकिन अच्छी बात यही रही कि सभी चीजें मिल गईं। इसके बाद मिशका, वोव्का और मैंने मिलकर नताशा मौसी के बाग की निराई की।

मिशका ने कहा, “निराई करने में क्या है! हर कोई इसे कर सकता है। यह तो एकदम आसान है। कम-से-कम दलिया पकाने से तो यह आसान है ही।”



We woke up in the morning as hungry as wolves. Mishka wanted to cook some porridge, but when I saw him get out the meal I got cold all over.

"Don't you dare," I said. "I'll go to Aunt Natasha, our landlady, and ask her to cook some porridge for us."

We went to Aunt Natasha and told her all about it and promised to weed her garden for her if she would cook some porridge for us. She took pity on us and gave us some milk and cabbage pie while she cooked our porridge. And we ate and ate as if we couldn't stop. Aunt Natasha's little boy Vovka stood watching with his eyes popping out.

At last we had had enough. Aunt Natasha gave us a hook and some rope and we went to fish the pail and the kettle out of the well. It took us a long time before we finally managed to pull them up. But luckily nothing got lost. After that, Mishka and I and little Vovka weeded Aunt Natasha's garden.

Mishka said: "Weeding is nothing. Anybody can do it. It's easy. Much easier than cooking porridge, anyway."

